4 दिल्ली सल्तनत का विस्तार

पिछले पाठ में हमने दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बारे में पढ़ा था। हमने पढ़ा कि सल्तनत के बड़े अधिकारी सुल्तान से दबकर नहीं रहना चाहते थे। हमने यह भी पढ़ा कि सुल्तान के अधिकारी गाँवों से लगान इकट्ठा नहीं कर पा रहे थे। बाद के सुल्तानों ने इन समस्याओं का किस तरह समाधान किया ?

यह जानने के लिए हम गुँजन और मनोरमा के स्कूल चलते हैं। गुंजन और मनोरमा कक्षा 7 वीं में पढ़ते हैं। आज उनकी कक्षा में इतिहास का पाठ पढ़ाया जा रहा था। शिक्षक बता रहे थे कि बल्बन की मृत्यु के कुछ सालों बाद सन् 1290 ई. में जलालुद्दीन ख़िलज़ी सुल्तान बना। जलालुद्दीन ख़िलज़ी उदारता व क्षमाशीलता को आधार बनाकर शासन करना चाहता था। लेकिन कुछ सालों बाद उसके ही भतीजे अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने उसे छल से मार दिया और खुद सुल्तान बन गया।

गुंजन ने शिक्षक से पूछा– गुरुजी, इन सब घटनाओं की जानकारी हमें कहाँ से मिलती हैं?

शिक्षक– आपने बिलकुल ठीक पूछा। मगर यह तो बताओ कि अशोक या हर्ष जैसे पुराने राजाओं के बारे में हमें कैसे पता चलता है?

डोली ने जवाब दिया– शिलालेखों, ताम्रपत्रों या सिक्कों से और उस जमाने में लिखी किताबों से हमें उनके बारे में पता चलता है।

शिक्षक– दिल्ली के सुल्तानों के शिलालेख तो बहुत कम मिलते हैं लेकिन उनके दरबार में रहनेवाले इतिहासकारों व कवियों के द्वारा लिखी किताबों से हमें काफी जानकारी मिलती है। प्राचीन काल के राजाओं में से कुछ ही राजाओं के शिलालेख हमें मिले हैं। बाकी राजाओं के बारे में बहुत कम या नहीं के बराबर जानकारी मिलती है। लेकिन सल्तनत काल के इतिहासकारों ने लगभग हर छोटे बड़े सुल्तान के बारे में काफी विस्तार से लिखा है। इनके अलावा इन सुल्तानों के सिक्के और उनके द्वारा बनवाई गई इमारतों से भी हमें बहुत जानकारी मिलती है। इस समय सूफी संतों ने कई पुस्तकें लिखीं। इनसे उस समय के लोगों के जीवन के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

आर्या : अलाउद्दीन ख़िलज़ी के बारे में हमें कौन–सी पुस्तक से पता चलता है?

शिक्षक : अलाउद्दीन के बारे में प्रसिद्ध फारसी कवि अमीर खुसरो की किताबों से हमें पता चलता है। इसके अलावा बरनी नामक इतिहासकार की पुस्तक **तारीख–ए– फिरोज़शाही** से भी जानकारी मिलती है।

1. पुराने समय के सभी राजाओं के बारे में हमें पूरी जानकारी क्यों नहीं मिल पाती?
2. सुल्तानों ने शिलालेख बहुत कम खुदवाए। इसके क्या कारण हो सकते हैं?

अलाउद्दीन ख़िलज़ी

शिक्षक– बच्चो, अलाउद्दीन सन् 1296 में दिल्ली का सुल्तान बना। वह बड़ा महत्वाकांक्षी था और उसने सल्तनत को सुदृढ़ बनाया।

सुल्तान बनने से पहले ही उसने दक्षिण भारत के देवगिरि राज्य को हराया था और वहाँ से काफी धन लूटकर लाया था। उस धन से उसने न केवल अपनी सेना को मजबूत बनाया बल्कि बड़े अमीरों में धन बाँटकर उन्हें अपनी तरफ कर लिया। धीरे–धीरे उसने ज्यादातर अमीरों व सरदारों को अपने नियंत्रण में कर लिया। उसने ऐसे कड़े नियम बनाए कि कोई भी अमीर अपनी मनमानी नहीं कर पाता था और सुल्तान की हर बात उसे माननी पड़ती थी। जो अमीर उसकी बात को नहीं मानते थे, उन्हें वह कठोर दंड देता था और उनकी जगह नए अमीर नियुक्त कर देता था। उसने बहुत से भारतीय मुसलमानों को भी ऊँचे पद दिए।

मनोरमा ने पूछा– तो क्या अमीरों ने उसके खिलाफ विद्रोह नहीं किया?

शिक्षक– अलाउद्दीन ने अमीरों के विद्रोहों को रोकने के लिए शराब पीना, शादी– ब्याह में खुलकर उत्सव मनाना, बड़ी दावत आदि पर रोक लगा दी। उसका मानना था कि ऐसे मौकों पर अमीर सुल्तान के खिलाफ षडयंत्र रचा सकते हैं। इसके अलावा उसके जासूस उसे हर अमीर की खबर देते रहते थे। इन कारणों से उसके खिलाफ कोई विद्रोह न हो सका।

1. देवगिरि से मिले धन का अलाउद्दीन ने क्या उपयोग किया?
2. अलाउद्दीन के खिलाफ अमीर विद्रोह क्यों नहीं कर पाए ?

राज्य का विस्तार

अलाउद्दीन के पास ताकतवर सेना व अनुशासित अमीर थे। उनका उपयोग उसने नए राज्यों को जीतने के लिए किया। सन् 1299 में उसने गुजरात पर विजय पाई। और उसके बाद रणथंभौर, चित्तौड़ व मालवा आदि राज्यों को हराकर वहाँ से खूब धन प्राप्त किया और इन राज्यों को उसने अपनी सल्तनत में मिला लिया।

शिक्षकः– मानचित्र 4.1 देखकर बताओ कि रणथम्भौर, चितौड़ और मालवा साम्राज्य दिल्ली से किस दिशा में है?

संदीप बोला– गुरुजी! ये सभी जगह दिल्ली के पूर्व दिशा में हैं।

सलमा ने तत्काल कहा– नहीं पश्चिम दिशा में हैं।

आप बताइए कि उन साम्राज्यों की सही दिशा क्या है?

अलाउद्दीन ने दक्षिण के राज्य देवगिरि पर कई बार आक्रमण किया और उसे परास्त कर बहुत सा धन लूटा, लेकिन देवगिरि को अपने राज्य में नहीं मिलाया। फिर वह एक लंबे अभियान में दक्षिण भारत के तमाम राजाओं को हराते हुए सुदूर दक्षिण में मदुरै और रामेश्वरम् तक जा पहुंचा। इस दक्षिण अभियान का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य विस्तार करना नहीं बल्कि धन प्राप्त करना

मानचित्र 4.1

था। इस कारण उन साम्राज्यों को जीतने के बाद अलाउद्दीन ने उन्हें उन्हीं राजाओं के हाथ सौंप दिया और बदले में उनसे हर साल कुछ कर एवं उपहार लेता था।

1. अलाउद्दीन ख़िलज़ी का साम्राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला था?
2. अलाउद्दीन खिलजी ने कौन–कौन से इलाके अपने सल्तनत में जोड़े?
3. अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने गुजरात व चित्तौड़ साम्राज्यों को अपने साम्राज्य में क्यों मिलाया लेकिन दक्षिण के साम्राज्यों को क्यों नहीं मिलाया ?

मनोरमा बोली– गुरुजी, लगता है कि अलाउद्दीन के साम्राज्य का सभी खर्च युद्ध से और किसानों के लगान से निकल जाता था।

शिक्षक– कुछ हद तक यह बात ठीक है, मगर शासन का अधिकांश खर्च किसानों से लिए गए लगान (भूमि कर) से चलता था। अलाउद्दीन ने तय किया था कि किसान अपनी उपज का आधा हिस्सा लगान के रूप में देंगे।

मनोरमा– मगर ये तो बहुत ज्यादा था।

शिक्षक– ज्यादा तो था। लेकिन अलाउद्दीन ने उस समय प्रचलित कई छोटे–छोटे करों को हटा दिया था और केवल भूमि कर और चराई कर वसूल करने का निश्चय किया था। इससे किसानों को अत्यधिक कर नहीं देना पड़ा। कर वसूल करने वाले पुराने राजाओं और अधिकारियों को नुकसान हुआ, क्योंकि अब उनकी आय कम हो गई।

जया– वह कैसे ?

शिक्षक– अलाउद्दीन के समय से पहले ये राजा और गाँव के मुखिया ही किसानों से लगान इकट्ठा करते थे। लेकिन अब सुल्तान के अधिकारी खुद किसानों से लगान की वसूली करने लगे। इससे उन राजाओं व मुखिया लोगों को जो रियायतें मिली हुईं थीं वे खत्म हो गईं। वे अब किसानों से मनमानी वसूली भी नहीं कर सकते थे। इस प्रकार अलाउद्दीन ने किसानों से सीधा संपर्क बनाया और बीच के बिचौलियों को हटा दिया।

जावेद– अरे, इतने कम समय में अलाउद्दीन ने कर व्यवस्था में बहुत सुधार किया।

शिक्षक बोले– हाँ! अलाउद्दीन ने दिल्ली में अपने सैनिकों को कम कीमत में पर्याप्त सामान मिले, इसके लिए भी विशेष प्रयास किया। उसने सभी सामानों की कीमत तय करके ऐलान कर दिया कि जो भी व्यापारी उससे अधिक कीमत लेगा या सही वजन से कम तौलेगा उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाएगी। साथ ही सभी वस्तुओं के बाजार को नियत स्थान पर रखा ताकि मूल्य को नियंत्रित किया जा सके।

सेना में भ्रष्टाचार न फैले इसके लिए उसने अपने सैनिकों के चेहरे का ब्यौरा दर्ज करवाया (हुलिया प्रथा) और घोड़ों को दागने की प्रथा शुरू की ताकि उनकी सही पहचान हो सके।

कक्षा में चर्चा करें कि इन बातों से भ्रष्टाचार पर रोक कैसे लगती होगी ?

इन सबके अलावा अलाउद्दीन की एक बड़ी उपलब्धि थी मंगोलों के आक्रमण को रोकना। मंगोल मध्य एशिया से लूटपाट करने व साम्राज्य स्थापना के लिए बड़ी सेना लेकर भारत आए थे। अलाऊद्दीन ने बड़ी सफलता के साथ उन्हें अपनी सीमा के बाहर ही रोक दिया और इस तरह दिल्ली सल्तनत मंगोलों के आक्रमण से बच गई।

सन् 1316 में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गई। उसके मरने के कुछ ही साल बाद दिल्ली में एक नए वंश की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की। यह वंश था तुगलक वंश और इस वंश का पहला सुल्तान था गयासुद्दीन तुगलक।

तुगलक वंश

शिक्षक– बच्चो, सन् 1320 में गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना और तुगलक वंश

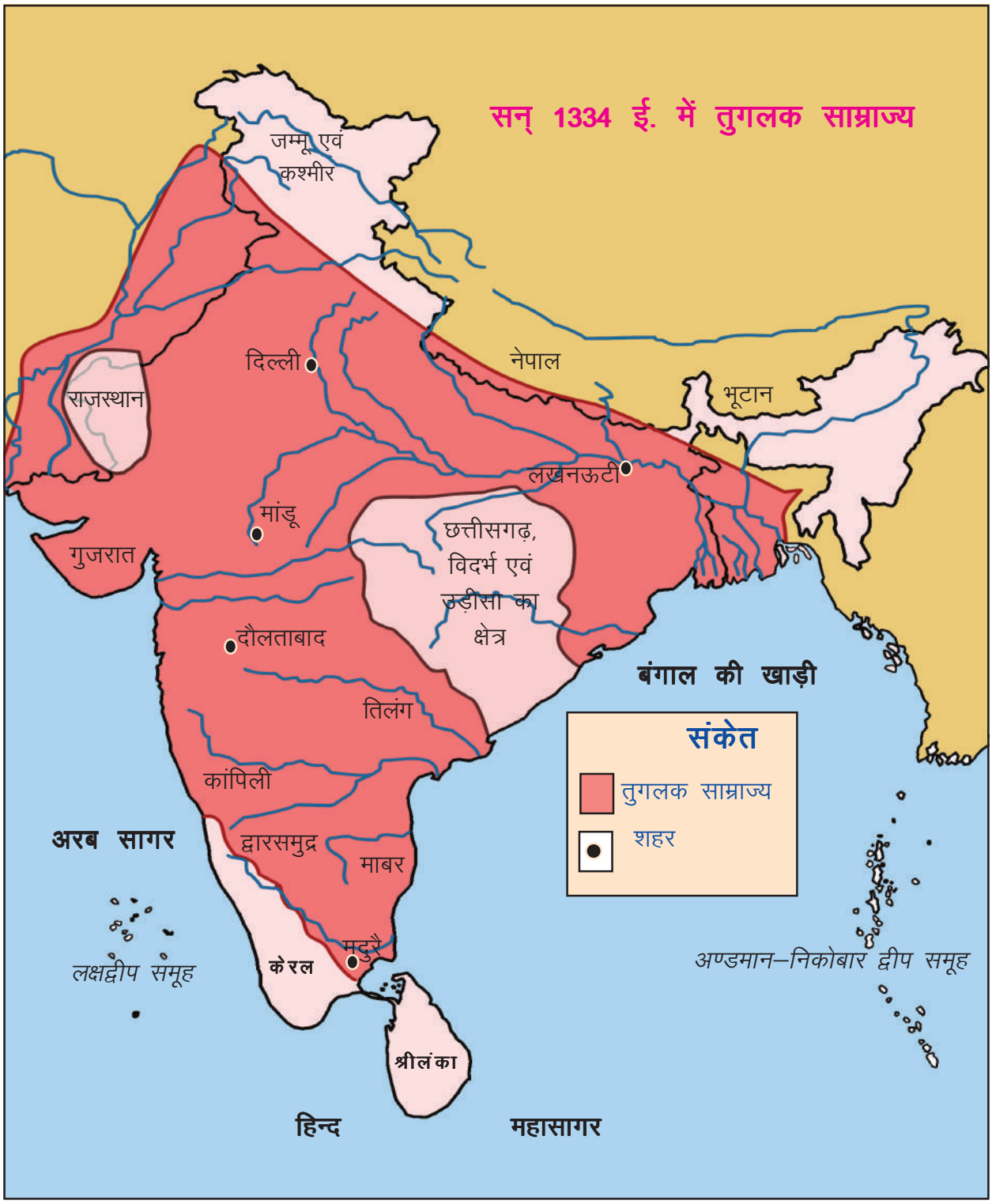

मानचित्र 4.2

की स्थापना की। उसने अलाउद्दीन की कठोर नीतियों को छोड़कर उदारतापूर्वक शासन करना चाहा। उसने दिल्ली के पास तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की। किन्तु सिर्फ 5 वर्ष शासन करने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद मुहम्मद बिन तुगलक सुल्तान बना। वह विद्वान, महत्वाकांक्षी और दूरदर्शी शासक था। उसने कई योजनाएँ लागू की जिनके कारण इतिहास में उसका नाम प्रसिद्ध है।

श्रीकांत– गुरुजी, उसकी योजनाएँ क्या थीं?

शिक्षक– उसकी दो योजनाएँ प्रसिद्ध हैं– पहली दक्षिण में देवगिरि (दौलताबाद) को अपनी राजधानी बनाना और दूसरी चाँदी के सिक्के की जगह ताँबा या पीतल के सांकेतिक सिक्के चलाना।

एक नई राजधानी

1. पहले आपस में चर्चा करें कि राजधानी क्या होती है, वहां कौन रहते हैं और वहाँ क्या–क्या होता है?
2. आपके राज्य की राजधानी कहाँ है ?
3. आपके देश की राजधानी कहाँ है ?

मुहम्मद बिन तुगलक ने सुल्तान बनने के कुछ साल बाद ऐलान किया कि दक्षिण में स्थित दौलताबाद नाम का शहर अब सल्तनत की राजधानी बनेगी। उसने आदेश दिया कि दिल्ली में रहनेवाले अधिकारी, कर्मचारी, सेनापति, विद्वान, आदि दौलताबाद की ओर कूच करें। जिन लोगों ने उसके आदेश नहीं माने उन्हें कठोर दण्ड दिया गया। जो लोग गए उन्हें रास्ते में बहुत कष्ट सहना पड़ा। कई लोग रास्ते में ही मर गए। दौलताबाद में रहना बहुत से लोगों को पसंद नहीं आया।

आर्या ने पूछा– मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद को राजधानी क्यों बनाई ? इससे उसे क्या फायदा हुआ होगा ? इससे लोगों को बहुत परेशानी हुई होगी।

शिक्षक ने कहा– आप सब तुगलक साम्राज्य का नक्शा मानचित्र 4.2 में देखें और समझने की कोशिश करें कि उसने ऐसा क्यों किया होगा ?

चित्र–4.1 गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा, तुगलकाबाद, दिल्ली

सांकेतिक मुद्रा :

LC5Q6T

मुहम्मद बिन तुगलक की दूसरी प्रमुख योजना थी चाँदी के सिक्कों की जगह ताँबे या पीतल के सिक्के चलाना। उन दिनों खरीदने और बेचने के काम में चाँदी के सिक्के चलते थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी बचाने के लिए ऐलान किया कि उसके ही मूल्य पर ताँबे के सिक्के चलेंगे अर्थात् अगर पहले एक चाँदी के सिक्के पर दस मन गेहूँ मिलता था तो अब एक काँसे के सिक्के के बदले भी उतना ही गेहूँ मिलेगा।

शिक्षक– उन दिनों पूरी दुनिया में चाँदी की कमी हो रही थी और चाँदी की कीमत बढ़ रही थी। शायद इसे देखकर वह चाँदी बचाना चाहता था।

कारण जो भी हो उसका नतीजा बहुत गलत हुआ। कई लोगों ने बहुत सारे जाली ताँबे के सिक्के ढलवा लिए और उसे बाजार में चलाने लगे। चाँदी की जमाखोरी होने लगी। इस कारण पूरी अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गई। अंत में मुहम्मद बिन तुगलक ने ताँबे के सिक्के को वापस ले लिया और लोगों को ताँबे के बदले चाँदी के सिक्के दिए। इससे राजकोष रिक्त हो गया। इसी तरह उसका दोआब में कर वृद्धि, कराजिल और खुरासान अभियान भी असफल रहा।

मुहम्मद बिन तुगलक की ये योजनाएँ भले ही असफल रही हों लेकिन उसका एक काम तारीफ के काबिल था। वह किसी को ऊँचे पद पर नियुक्त करते समय यह नहीं देखता था कि वह आदमी भारतीय है या तुर्क; हिन्दू है या मुसलमान; अमीर है या गरीब; एक कारीगर का बेटा है कि सेनापति का बेटा। जो योग्य था उसी को उसने नौकरी दी। इसका नतीजा यह हुआ कि पुराने तुर्क अमीरों की जगह सामान्य लोगों ने भी ऊँचे पद प्राप्त किए।

इस सबके बावजूद समस्या यह थी कि सल्तनत बहुत बड़ी हो गई थी और उसे एक रखना मुश्किल हो गया था। जगह–जगह सुल्तान के खिलाफ विद्रोह होने लगे और कुछ समय बाद लगभग हर प्रांत एक स्वतंत्र सल्तनत बन गया।

छत्तीसगढ़ पर सल्तनत कालीन शासकों का प्रभाव नहीं था। रतनपुर के कल्चुरि राजा यहाँ राज करते रहे। इनके अंतर्गत अनेक जमींदारियाँ थीं। यहाँ की राजनीति में आदिवासी समाज की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

अभ्यास के प्रश्न

LCEL8G

1. नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए–

(दौलताबाद, देवगिरि, रामेश्वरम्, सिजदा, हुलिया, तुगलकाबाद, कल्चुरियों)

1. अलाउद्दीन ख़िलजी ने सुल्तान बनने के पूर्व ..... पर आक्रमण किया था।
2. गयासुद्दीन तुगलक ने ..... नगर की स्थापना की थी।
3. सेना में भ्रष्टाचार रोकने के लिए अलाउददीन ख़िलजी ने सैनिकों की ..... प्रथा शुरू की थी।
4. दिल्ली में तुर्क सुल्तानों के शासन के समय छत्तीसगढ़ में ..... वंश का शासन था।
5. मुहम्मद बिन तुगलक ने ..... को नई राजधानी बनाया।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कैकुबाद के बाद दिल्ली का सुल्तान कौन बना ?
2. तारीख–ए–फिरोजशाही के लेखक कौन हैं ?
3. सेना में घोड़ों को दागने की प्रथा किसने शुरू की ?
4. मुहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी की जगह किस धातु के सिक्के चलाए ?
5. अलाउद्दीन के शासनकाल में किसानों को कितना लगान देना पड़ता था ?
6. अलाउद्दीन ने बाजार को नियंत्रित करने के लिए क्या–क्या कदम उठाए ?
7. मुहम्मद बिन तुगलक की प्रमुख योजनाओं का वर्णन करो ।
8. अलाउद्दीन ने लगान–व्यवस्था में क्या सुधार किया ?

योग्यता विस्तार–

मानचित्र 4.1 को देखिए और आपस में चर्चा कर बताइए कि मुहम्मद बिन तुगलक की राजधानी योजना परिवर्तन आपके अनुसार सही था या गलत ?